IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
IJARSCT
Impact Factor: 5.731
Volume 12, Issue 1, December 2021

नेहरू की समकालीन प्रासंगिकता का एक अध्ययन

अजीत प्रताप सिंह

सहायक आचार्य (इतिहास)

रमाबाई राजकीय महिला स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, अकबरपुर, अंबेडकरनगर

शोध सारांश

जवाहर लाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। वे एक दूरदर्शी राजनेता थे। उनका दृष्टिकोण सदैव वैज्ञानिक था। वे लोकतांत्रिक समाजवाद के प्रति आग्रही थे। वे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया। वे आधुनिक भारत के वास्तविक निर्माता थे। उन्होनें अपने प्रयासों से राष्ट्र निर्माण का कार्य किया।उन्होने दुनिया को पंथनिरपेक्षता का न केवल पाठ पढाया अपितु जीवन जीकर दिखाया। वे अभिव्यक्ति की आजादी के बडे पैरोकार थे।वे देश मे चाहते थे कि बडे बडे बांध बने जिससे सिचाई की व्यवस्था सुचारू हो सके। वह भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा मे काम कर रहे थे तभी वह विभिन्न प्रौद्योगिकी संस्थानो की स्थापना करायी। वह तृण मूल लोकतंत्र के समर्थक थे तथा गांधी के विचारों को आचरण मे प्रयोग करते थे।

मुख्य शब्दः

लोकतंत्र, समाजवाद, वैज्ञानिक, पंथनिरपेक्ष , आधुनिकता, राष्ट्र,

वर्ष 2010 के आसपास से भारत में वह गदर क्रांति के बारे में कहानियों के माध्यम से सोशल मीडिया का प्रयोग आम जन-मानस करने लगा था। सोशल मीडिया ने आम जन तक खास जानकारी सहज रूप से उपलब्ध कराना शुरू कर दिया परिणामस्वरूप इस प्लेटफार्म से लोग सूचना ले और दे रहे थे। इन्हीं सूचनाओं के प्रचालन में कुछ मनगड़न्त प्रश्न व उत्तर प्रचलित होने लगे जिससे भारत की गौरवशाली विरासत व्यक्तित्वों को ठेस पहुंचना शुरू हुआ तथा नयी पीढ़ियों का

भ्रामक व असत् ज्ञान से साक्षात्कार होने लगा।[1] इन्ही गौरवशाली व्यक्तियों में एक महान व्यक्तित्व के स्वामी पं. जवाहर लाल नेहरू भी है। पं. नेहरू के संदर्भ में बहुत से मनगढ़ंत तथ्यों का प्रचालन सोशल मीडिया पर प्रारंभ हुआ और नयी पीढ़ियों को प्रभावित करने लगा। पं. नेहरू के संदर्भ में कुछ इस प्रकार के मिथ्या तथ्य जैसे पं. नेहरू का सबंध इस्लाम से है, पं. नेहरू के वजह से कश्मीर समस्या है, आदि, उत्पन्न हुए।

'पं. नेहरू कोई मुसलमान नहीं थे। उनके पूर्वज कश्मीरी कौल हिन्दू थे।[2] फर्रुखसियर के कहने पर उनके पूर्वज राज कौल जो संस्कृत व फारसी के विद्वान थे, दिल्ली आये। दिल्ली में आकर नहर के किनारे स्थित मकान में रहने लगे तथा इसी नहर शब्द से नेहरू शब्द आया।[2] परिणामस्वरूप इनके पूर्वजों ने नाम के अंत में कौल नेहरू शब्द का करना प्रारंभ कर दिया कालांतर में कौल शब्द समाप्त हो गया और नेहरू ही प्रचलन में रह गया। पं. नेहरू के परदादा लक्ष्मी नारायण कौल जहाँ कंपनी के प्रथम सरकारी वकील थे वही दादा गंगाधर नेहरू 1857 के आंदोलन के पूर्व कोतवाल पद पर आसीन रहे । 1857 की क्रांति में नेहरू परिवार की आर्थिक हैसियत तहस व नहस हो गयी, परिणामत: यह परिवार दिल्ली से जाकर आगरा में बस गया और वहीं पं. नेहरू के पिता का जन्म 1861 में हुआ।[3] पं. नेहरू के पिता का लालन- पालन करने वाले उनके भाइयों (वंशीधर नेहरू व नंदलाल नेहरू) में से नंदलाल नेहरू हाईकोर्ट में प्रैक्टिस करते थे और जब हाईकोर्ट इलाहाबाद में स्थानांतरित हुआ तब नेहरू परिवार इलाहाबाद में आकर स्थापित हो गया। पं. नेहरू का जन्म 14 नवंबर 1889 को मार्गशीर्ष सप्तमी संवत 1946 को हुआ इलाहाबाद में ही हुआ। पं. नेहरू बचपन में अपनी माता व पिता के मुंशी मुबारक अली (निवासी बदायूँ) के निकट थे। मुंशी मुबारक अली से ही जानकारी प्राप्त किया।

पं. नेहरू सदैव अग्रगामी सोच के व्यक्ति थे । वह बचपन में ही डान क्विकजोट, फारदेस्ट नार्थ, लुई करील, किपिलंग, एच. जी. वेल्स, मार्क ट्वेन, शालकिहोम्स, जेरोम के. जोसेफ दि की पुस्तकों को पढ़ डाला था। पं. नेहरू बहुत ही उत्सवधर्मी व्यक्ति थे। वे चाहते थे कि उनका जन्म दिन एक वर्ष में कई बार मनाया जाय किंतु ऐसा संभव नहीं हो हो पाने पाने पर वे उदास व निराश हो जाते थे। पं. नेहरू दस वर्ष की आयु में आनंद भवन में रहने आ गये थे तथा बोअर युधों में रूचि के कारण अखबारों को गंभीरता से पढ़ना प्रारंभ कर दिया था। जब नेहरू को बहन पैदा हुई थी। डाक्टर ने कहा कि मुबारक हो आपको बहन हुयी और आपके जायदाद में हिस्सा नही लेगी । इस बात पर पं. नेहरू क्रोधित हुए । उनका मानना था कि स्त्री पुरुष समान हैं। वे स्त्री पुरूष संबंधों को भी सदाचार

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
IJARSCT
Impact Factor: 5.731
Volume 12, Issue 1, December 2021

व दुराचार से परे मानते थे, जिसके पीछे नीतशे, बनड शा व डिकिंसन पर गंभीर अध्ययन व बहस का कारण था। पं. नेहरू में बचपन से ही राजनीति के प्रति दिलचस्पी रही। जब हैरो में पं. नेहरू अध्ययन कर रहे थे तो 1905 में लिबरल के जीत पर एक वर्ष बाद हैरों के प्राध्यापक ने जब कक्षा में प्रश्न पूछा तब पं. नेहरू अकेले छात्र थे जिन्होंने जवाब दिया। हैरो में रहते हुए पं. नेहरू जी.एम. ट्वेलियन व गैरी बाल्डी का अध्ययन कर डाला जिससे उनमें आजादी के प्रति बहादुरी से लड़ाई का भाव पैदा हुआ। कैंब्रिज में रहने के दौरान विपिन चंद्र पाल, लाला लाजपत राय व गोपाल कृष्ण गोखले भाषणों ने पं. नेहरू को प्रभावित किया प्रतिभा के धनी पं. नेहरु बीस वर्ष की आ अर्थात् वर्ष 1910 में ही कैंब्रिज से वैरिस्टरों कर लिया।[4]

पं. नेहरू भारत में प्रथम भाषण वर्ष 1915 में इलाहाबाद में टी. बी. सप्पु की उपस्थिति में दिया।[5] जब पं नेहरू राष्ट्रीय आंदोलन में सम्मिलित होने को बात पिता से बताया तो पिता कई रात सो न सके तथा जेल में होने वाले कष्टों को अपने ऊप अजमाकर पं. नेहरू को समझाने का प्रयास पिता ने किया। पं. नेहरू के न मानने पर उन्होंने गांधी जी को इलाहाबाद बुलवाकर समझाने का प्रयास किया। पं. नेहरू के ऊपर यह आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में सुविधा भोगी भूमिकाओं का निर्वहन किया। यहाँ आक्षेपकर्ता यह भूल है कि साइमन कमीशन के लखनऊ आगमन के विरोध में जो प्रदर्शन आयोजित हुआ उसमें में नेहरू भी चारबाग में शामिल थे और उन पर लाठियों में जो तगड़ा प्रहार किया गया उससे उनके आंखों के सामने अंधेरा छा गया था।[6] किंतु गाँधी जी के अहिंसा पाठ से बंधकर सामने वाले पर हाथ तक न उठाया। पं. नेहरू ने अवध के किसान आंदोलन जिसमें प्रतापगढ़ का किसान आंदोलन उल्लेखनीय था, का भी नेतृत्व किया। असहयोग आंदोलन के दौरान जब पं. नेहरू जेल से रिहा होकर आनंद भवन आये तो उन्होंने अंग्रेजी दोस्तों के घर आने पर प्रतिबंध लगा दिया था विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार हेतु दुकानों पर धरना शुरू कर दिया। इस कार्य हेतु उन्हे गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया।

आज के दौर में भारत माता की जय का प्रचलन सभाओं में बढ़ गया है। यह नारे व प्रतीक राष्ट्रवादी के पैमाने बन गये हैं। पं. नेहरू का भारत माता के विषय में दृष्टिकोण स्पष्ट था। वे पंजाब को एक जनसभा में भारतमाता की जय बोलते हुए कि कहा कोई पर्वत, नदी, खेत व खलिहान नहीं है। इसका तात्पर्य भारत में रहने वाले लोगों से हैं अर्थात भारत माता की जय का मतलब देश के निवासियों की जय से है, तथा सच्ची जय तभी होगी जब हम गरीबी, भुखमरी और अशिक्षा पर विजय प्राप्त करेंगे। जब वे किसी परियोजना का उद्घाटन करने जाते तो वहाँ पर मजदूरी करने वाले

लोगों को बुलाकर उद्घाटन करवाते थे। उनका मत था कि मजदूर भारत का निर्माण कर रहा है और उसको ही वे असली भारत माता मानते थे। पं. नेहरू कभी भी गलत बात पर लोगो को फटकारने से झिझकते नही थे यही कारण है जब एक जत्था मुस्लिम के सामान लुट कर गांधी नेहरू व भारतमाता की जयघोष कर रहा था तब नेहरू ने कहा कि गाँधी की जय बोलते हुए तुमको शर्म आनी चाहिए। चर्चिल ने कहा था कि अगर अग्रेजी शासन भारत से समाप्त हो जाय तो भारतीय इस देश का संचालन नहीं कर सकेगें। ये जाहिल लोग आपस में ही लड़ मरेगें और देश के सैकड़ों टुकड़े कर देगें । पं. नेहरू के विचारों व कार्यों ने चर्चिल के घोषणा को निर्मल साबित कर दिया। वे सदैव कहते थे कि आप सरकार की निंदा करिये तथा उसकी कमियों को उजागर करिये तथा मौका आने पर उसे सत्ता से हटा दीजिये किंतु ऐसा कोई काम मत कीजिये जिससे हिन्दुस्तान कमजोर हो। वे देश को एक परिवार मानते थे जिसके छत्तीस करोड़ सदस्य हैं। इस परिवार में जातीयता व सांप्रदायिकता एक दीवार का काम करते हैं। वे इस दीवार को उखाड़ फेंकने की बात करते थे क्योंकि यह देश को कमजोर व दुर्बल बना रहा है। जब देश के किसी हिस्से में कही भी हिंसा होती है तो पं. नेहरू हम सबको बरबस याद आते हैं वे कहते थे कि हम दुश्मनों अर्थात शेरों पर फतह कर लिया पर पीछे से आकर सांप इस रहे हैं। सांप से उनका तात्पर्य अपनी कमजोरियों से है। हिंसा का मतलब है कि हम अपनी कमजोरियों से पराजित हो रहे हैं।

पं. नेहरू सदैव ही प्रसांगिक रहेगे। इसका कारण उनकी विवेकशीलता व दूरदृष्टि है। अभी आप सभी को याद होगा कि कुछ दिन पहले सिनेमाघरों में राष्ट्र गान बजाया जाता था और उसके प्रोटोकाल में सभी खड़े होते थे किंतु कुछ दिन बाद सिनेमाघरों में राष्ट्रगान बजना बंद हो गया क्योंकि यह व्यवहारिक नहीं था। इस विषय में पं. नेहरू ने

पहले ही कहा था कि सिनेमा के अंत में लोग जाने की जल्दबाजी में होते हैं अतएव उसके प्रोटोकाल का पालन व्यवहारिक नहीं है। सिनेमाघरों को सिनेमा के अंत में राष्ट्रगान की जगह राष्ट्रध्वज दिखलाना चाहिए। नेहरु सदैव तृणमूल लोकतंत्र के पोषक रहे। यही कारण है कि उन्होंने 1952 में नागौर में सामुदायिक विकास योजना का उद्घाटन कर एक प्रत्येक व्यक्ति को शासन कार्य में भागीदार बनाने का प्रयत्न किया। नेहरू का हिंदुस्तान दिल्ली में नही अपितु गाँवों में बसता है। उन । उनका कहना था कि जब गांव उठता है जगता बढ़ता है तब बंबई कलकत्ता आगे बढ़ता है। उन्होंने मेहनत करने हेतु सभी को ताकीद किया और अन्य देशों से तुलनात्मक अध्ययन कर स्पष्ट

किया कि हमें उन देशों जैसे रूस, चीन आदि से सीखना चाहिए। वे कहते थे कि भारत में जितना अवकाश होता है उतना अवकाश विश्व में कहीं नहीं होता। भारत केवल काम से आगे बढ़ेगा।

जब चुनाव सभाओं में आज के नेतागण भाषण करते हुए अन्यों पर व्यक्तिगत हमले करते हैं तब पं. नेहरू की यह बात याद आती है। वे कहते थे कि चुनाव अभियान का स्वरूप चाहे जैसा हो अर्थात लिखित हो या मौखिक इतना याद रखना चाहिए कि उसमें व्यक्तिगत बातें न होकर नीतियों एवं कार्यक्रम की चर्चा होनी चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि चुनाव परिणाम जो भी आये उसे सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए पं. नेहरू भाषा के मुद्दे पर अत्यंत संवेदनशील थे। वे सरदार पटेल की भांति आल इंडिया रेडियो को पत्र लिखकर कहा कि ऐसी भाषा का प्रयोग हो जिसे सब समझ सकें अर्थात् हिंदुस्तानी का प्रयोग हो। पं. नेहरू ने संविधान के हिंदी अनुवाद के अवसर पर कहा कि मैं चाहता है कि हिंदी विकास करके परे देश की आवाज बने लेकिन कुछ लोग उसके विकास का ऐसा तरीका अपना रहे हैं उसकी जीवंतता ही समाप्त हो जायेगी तथा उसमें ठहराव आ जायेगा। पं. नेहरू इस बात पर सदैव बल देते रहे कि हिंदी का विकास किसी दूसरी भाषा की कीमत पर नही होना चाहिए।

पं० नेहरू पर आये दिन आरोप लगाया जाता है कि कश्मीर समस्या उनकी देन है था उन्होंने कश्मीर मुद्दे पर सरदार पटेल को हस्तक्षेप करने से रोक दिया था। यह आरोप कतई उचित नहीं है। नेहरू की दृष्टि कश्मीर के प्रति स्पष्ट थी। कश्मीर के प्रति उनका लगाव इस नाते नहीं था कि वह उनके पूर्वजों की भूमि थी अपितु वे यह जानते थे कि कश्मीर का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व है। इस महत्व को खुश्चेव के इस वाक्य से समझा जा सकता है कि हमें आप चोटी से आवाज देकर बुला सकते हैं। नेहरू ने इंदिरा को पत्र में बताया था कि भारत में सिकंदर का प्रवेश इसी रास्ते से हुआ था। यह भली भाँति जानते थे कि यह क्षेत्र यदि पाकिस्तान के हाथ में चला गया तो विदेशी ताकतें भारत को अस्थिर करती रहेंगी। पं. नेहरू ने संविधान सभा में कहा था कि कश्मीर के प्रश्न को हिंदू मुसलमान के चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए जैसा कि पाकिस्तान चिल्ला रहा है। यह बात आप निश्चित जानिये कि यदि हमें कश्मीर की आवाम का साथ न मिला होता तो हम वहाँ से कबाइलियों को परास्त न कर पाते। कश्मीर के आवाम का यह सहयोग वहाँ के लोकप्रिय नेता शेख अब्दुल्ला की वजह से मिला था। शेख अब्दुल्ला पं. नेहरू के प्रयास से कैद से रिहा हुए थे और शेख अब्दुल्ला ने अपने प्रथम भाषण में कहा कि हमारा पाकिस्तान के ना में कोई विश्वास नहीं है। शेखा अब्दुल्ला कोई एकाएक नेता नहीं बने थे अपितु 1932 से वह सक्रिय हो गये थे कालांतर में

नेहरू के प्रभाव के कारण धर्मनिरपेक्षता को स्वीकार करते हुए अपनी पार्टी के नाम से मुस्लिम शब्द हटाकर नेशनल शब्द जोडकर नेशनल कांफ्रेंस रख लिया। जब कश्मीर में राजा हटाओ का आंदोलन शेख अब्दुल्ला ने चलाया तब वे गिरफ्तार कर लिए गये। इसी सिलसिले में पुनः पं. नेहरू से शेख अब्दुल्ला की मुलाकात हुई तथा पं. नेहरू ने उनके मुकदमें की पैरवी कर रिहा कराया। जेल में बंद रहने के दौरान पं नेहरू ने ही उनके बेटे फारूक अब्दुल्ला के पढ़ने की व्यवस्था किया। इस प्रकार शेख अब्दुल्ला पं. नेहरू के प्रभाव में आ गये थे। जब महाराज हरि सिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किया यदि उस समय कश्मीरी आवाम साथ न देती तो इनका भी हा वही होता जो जूनागढ़ हैदराबाद के निजाम का हुआ। उस कश्मीर की जनता के तरफ से शेख अब्दुल्ला खडे हुए जो पं. नेहरू के प्रभाव में थे । इस प्रकार स्पष्ट है कि बिना पं. नेहरू के कश्मीर का विलय नही कराया जा सकता है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि सरदार पटेल का जम्मू व कश्मीर के विषय में सदैव हस्तक्षेप बना रहा। जब माउंटबेटन कश्मीर के साथ समझौता कर रहे थे तो सरदार पटेल ने उनके मार्फत पाकिस्तान में मिलने का विकल्प दिलवाया था। सरदार पटेल सदैव वहां के प्रधानमंत्री रामचंद्र काक के संपर्क में रहते थे। उनके वहां जस्टिस मेहरचंद महाजन का अन्तरिम प्रधानमंत्री के रूप में चयन सरदार पटेल ने कराया था। इस प्रकार यह आरोप लगाना कि पं. नेहरू जम्मू व कश्मीर से पटेल को अलग थलग कर दिया था बेमानी है।

संदर्भ सूची

1. मास कम्युनिकेशन और समाज. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन, 2005।
2. सर्वपल्ली गोपाल. *जवाहरलाल नेहरू: एक जीवनी.* कैम्ब्रिज: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1975। जवाहरलाल नेहरू.
3. बी. आर. नंदा. *नेहरू: मोतीलाल और जवाहरलाल.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1962।
4. एम. जे. अकबर. *नेहरू: भारत का निर्माण.* नई दिल्ली: वाइकिंग, 1988।
5. जवाहरलाल नेहरू के चयनित कार्य. नई दिल्ली: जवाहरलाल नेहरू स्मारक निधि, 1972।
6. बिपिन चंद्र. *भारत का स्वतंत्रता संग्राम.* नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, 1988।